Sanvahak, Vol.-1; Issue-2 (Oct.-Dec.) 2025 : PP-34-37

Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Multidisciplinary (All Subjects) & Multilingual (All Languages) Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)
Vol.-1; Issue-2 (Oct.-Dec,) 2025
Page No.- 34-37
©2025 **Sanvahak**
https:// sanvahak.gyanvividha.com
Author's :

Dr. Elizabethi
Assistant Professor,
Mizoram Hindi training college.

Corresponding Author :

Dr. Elizabethi
Assistant Professor,
Mizoram Hindi training college.

मिज़ो साहित्य में मौखिक परंपरा

1. प्रस्तावना : मिज़ो साहित्य में मौखिक परंपरा मिज़ो साहित्य की प्रारंभिक शुरुआत कब हुई यह प्रश्न अत्यंत जटिल और अनुसंधान प्रधान माना जाता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि मिज़ो समाज के प्रारंभिक काल में कोई लिखित परंपरा उपलब्ध नहीं थी। उस समय समुदाय कि सम्पूर्ण सांस्कृतिक धरोहर–कथाएँ, मिथक, दंतकथाएँ, गीत, गाथाएँ और सामाजिक अनुभव केवल मौखिक धरोहर का स्त्री–पुरुषों, परिवारों और समुदाय द्वारा वाचन, स्मरण और पुनरावृत्ति के माध्यम से संरक्षण किया जाता था। इसी कारण प्रारंभिक साहित्यक काल का सटीक निर्धारण लगभग असंभव माना जाता है। फिर भी अनेक विद्वानों ने उपलब्ध मौखिक स्मृतियों, लोक सामग्री और ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर इसकी समय सीमा निर्धारित करने का प्रयास किया है।

कुछ शोधकर्ता मानते हैं कि जब मिज़ो रुन और tiau नदियों के मध्य क्षेत्र में निवास करते थे, तब लगभग 1300 ई. के आसपास मिज़ो मौखिक साहित्य का संगठित विकास प्रारम्भ हुआ। प्रख्यात मिज़ो विद्वान डॉ. ललथंगलियाना ने मिज़ो मौखिक साहित्य की अवधि 1300 ई. से 1893 ई. तक मानी है। उनका मत है कि 1300 ई. से पूर्व भी कथाएँ और गीत रचे जाते थे, परंतु इन परम्पराओं का व्यवस्थित विस्तार 1300 ई. के बाद स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। दूसरी और Prof. Laltluangliana इसे प्रारम्भ से 1870 ई. (00-1870 ई.) तक का चरण मानते हैं, और बताते हैं कि इस काल में मिज़ो समाज ने बिना लिखित भाषा के अपनी सांस्कृतिक स्मृतियों और लोकज्ञान को मौखिक रूप में जीवित रखा।

इसी संदर्भ में Prof. Darchhawna का मत विशेष रूप से

उल्लेखनीय है। उनके अनुसार लिखित साहित्य के उद्भव से पूर्व मिज़ो समाज में अत्यंत समृद्ध मौखिक परंपरा विद्यमान थी, जो समुदाय कि ऐतिहासिक अनुभवों का आधार थी। किन्तु लिपि परंपरा और लेखन- सामग्री के अभाव में इस मौखिक साहित्य का एक बड़ा हिस्सा समय के साथ विखंडित हो गया या विलुप्त हो गया। इससे मौखिक साहित्य धरोहर के कुछ ही अंश आज व्यवस्थित रूप में उपलब्ध हैं।

इन्हीं व्यापक अध्ययनों के आधार पर Prof. Laltluangliana Khiangte ने मिज़ो साहित्य को दो प्रमुख वर्गों में विभाजित किया हैं।

1. **Oral Tradition/Oral Composition (मौखिक साहित्य)**
2. **Written Literature (लिखित साहित्य)**

मौखिक साहित्य को उन्होंने मिज़ो साहित्य की सबसे प्राचीन और आधारभूत परंपरा माना है। लिखित साहित्य का विकास बाद में हुआ और इसे उन्होंने समय व विकास के आधार पर आगे तीन चरणों में विभाजित किया है। इस प्रकार मिज़ो साहित्य का ऐतिहासिक प्रवाह मौखिक परंपरा से आरंभ होकर लिखित साहित्य की परिपक्व अवस्थाओं तक एक निरंतर विकसित होती सांस्कृतिक यात्रा है।

2. मिज़ो साहित्य में मौखिक परंपरा : अवधारणा

मिज़ो साहित्य में मौखिक परंपरा : मिज़ो साहित्य में मौखिक परंपरा का अर्थ – वे कहानियाँ, गीत, कहावतें, मिथक और सांस्कृतिक ज्ञान, जिन्हें मिज़ो लोग एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक बोलकर या गाकर आगे बढ़ाते हैं, लिखकर नहीं । सरल शब्दों में – "पुरानी कहानियाँ और गीत जिन्हें मिज़ो लोक बोलकर सुनते है और याद रखते हैं"।

3. इस मौखिक परंपरा की धारा के अंतर्गत परंपरागत गीत : मिज़ो लोकगीत

इस मौखिक परंपरा की उसी समृद्ध धारा के अंतर्गत परंपरागत गीत : मिज़ो लोक गीत : मिज़ो समाज में लोक गीत उनकी संकृतिक पहचान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। जैसे हर जनजाति के अपने पारंपरिक गीत होते हैं, वैसे ही मिज़ो समुदाय के लोक गीत उनके जीवन, इतिहास, प्रकृति और सामाजिक मूल्यों को समझने का प्रमुख माध्यम हैं। इन गीतों के माध्यम से हम मिज़ो लोगों के प्राचीन जीवन, उनके रहन-सहन, विश्वास, उत्सवों, प्रकृति प्रेम और सामाजिक व्यवस्था के बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं। मिज़ो लोक गीत मुख्यतः मौखिक परंपरा से चले आते हैं। इन गीतों को पीढ़ी ढर पीढ़ी बोलकर या गाकर आगे बढ़ाया गया है। इसी कारण इनके असली रचियाता का पता लगाना समान्यतः कठिन होती है। कभी ये गीत बुजुर्ग द्वारा कथा की तरह सुनाए जाते थे। मिज़ो लोकगीतों की विषय – वस्तु काफी विविध और समृद्ध है।

इनमें –

वीरता और युद्ध से जुड़े गीत

प्रेम और विरह से जुड़े गीत

मिथकीय पात्रों, आत्माओं और लोककथाओं पर आधारित गीत

बच्चों के खेल – कूद से जुड़े गीत

मृत्यु, शोक और जीवन – चक्र से संबन्धित गीत

प्रकृति – नदी, पर्वत, वर्षा, बादल – पर आधारित गीत सब शामिल होते हैं।

4. मिज़ो पारंपरिक लोकगीतों का परिचय : मिज़ो पारंपरिक लोकगीतों का परिचय : मिज़ो लोगों के सबसे पुराने लोकगीत उस समय को माने जाते हैं जब वे Run नदी और Thantlang (Than पर्वत) के आस- पास निवास करते

थे। उस समय युवक–युवतियाँ गाँव के खुले मैदान में रथ हाथ पकड़कर खड़े होते, और अलग -अलग दिशाओं में चलते हुए विशेष ध्वनियों और छंदों का उच्चारण करते थे। पूर्व दिशा की ओर चलने पर वे कहते थे- "ur ur tak kai,ur ur tak ai" पश्चिम दिशा की ओर बढ़ते हुए वे गाते थे - "hnung hnung tak kai, hnung hnung tak ai" और सीधे सामने की ओर मुड़कर कहते है- "Khawmhma pal a er an ti, a duh duhin er rawh se"

ऐसा माना जाता है कि Run नदी के आसपास के निवास – काल में मिज़ो लोगों ने अनेक प्राचीन लोकगीतों की रचना की थी। उनमें से एक अत्यंत पुराना और लोकप्रिय गीत है - "Ruahpui sur bum bum e,vanrial a chim e. Ka nauvi kal nan e,Run tui a lian e" (बरसाती तूफान की गड़गड़ाहट, ऊंचे आकाश को पुकार रही है, Run नदी की उठती लहरे मेरे प्रिय के मार्ग को रोक रही है) कुछ विद्वान इसे मिज़ो समुदाय का सबसे प्राचीन लोकगीत मानते हैं।

इसी प्रकार Liandova द्वारा रचित माना जाने वाला गीत – "Ka chiah lama pal siau siau ing e Ka kih lama Gun tui a lian e. Ka thai chawngi pam ta lia hi e" (आगे की राह पर मैं निःशंक चलता गया, पर लौटते समय रुन नदी उमड़कर सब बहा ले गई हाय वह विपत्ति, जिसने मुझसे चावङी को छिन लिया") यह भी मिज़ो लोगों के सबसे पुराने गीतों में शामिल किया जाता है। उसी समय का एक बाल- गीत भी अत्यंत प्राचीन माना गया है, जिसे बच्चे गाते थे – "Ni a chhuak ka hmu hmasa ber Liandova te in chara, Savate, chawngza-wngte Khuang el el" ("सूरज उगा और मैंने उसे सबसे पहले देखा लियनदोवा के आँगन के पीछे। जहाँ पक्षी और गौरियाँ आनंद से विचरती हैं") पहली नजर में ये लोकगीत बहुत सरल और साधारण प्रतीत होते हैं, परंतु गहराई से पढ़ने पर इनमें काव्यात्मक सौंदर्य, भावनात्मक गहराई, और प्रकृतिक जीवन की सजीव अनुभूति स्पष्ट दिखाई देती है।

इन लोक गीतों से यह भी सिद्ध होता है कि मिज़ो साहित्य कि वास्तविक शुरुआत लोकगीतों और मौखिक परंपरा से ही हुई थी। इन गीतों की भावनाएँ आज भी मन को छू लेती हैं और मिज़ो सांस्कृतिक इतिहास की जड़ों से जोड़ देती हैं।

5. मिज़ोरम क्षेत्रों में निवास के प्रारम्भिक काल के लोकगीत : मिज़ोरम क्षेत्रों में निवास के प्रारम्भिक काल ले लोकगीत – मिज़ोरम में मिज़ो जनजाती के आने से पहले Hmar जनजाति इस क्षेत्र में पहुंची थी। माना जाता है कि Hmar लोग सबसे पहले Tiau नदी को पार करके मिजोरम आए। उस समय राजा Mangkhaia ने hmar समुदाय को पराजित किया था। आगे चलकर zadeng लोगों ने राजा Mangkhaia को पकड़ लिया। इसी घटना के समय राजा Mangkhaia ने एक प्राचीन लोकगीत की रचना की। जो इस प्रकार है- "ka di ka zawl ka ti lem love, Lanu Suihlung a leng tam na e. Dara sawngka lerah ka chuan e, Kan champhai khua. Thoh ang thlir ing e."

इसी प्राचीन काल में जब Darlalpuii की मृत्यु हुई, तो उनकी माता ने अत्यंत करुणा भाव से एक गीत रचा। इसे मिज़ो लोकगीतों में स्त्री द्वारा रचित सबसे प्रारम्भिक गीतों में से एक माना जाता है- "Dar Lal,ka vapual Sibutan Sial ang a chhun che, Ka Sechal ka vapual..... इसी प्रकार कवल्नि चाय गीत,लल्लुला गीत, नेहलईया गीत, दरलुंगी गीत,को भी मिज़ो समुदाय के बहुत पुराने और मूल्यांवन लोकगीतों में शामिल किया जाता है। ये गीत प्राचीन मिज़ो जीवन, सामाजिक सम्बन्धों, भावनाओं और ऐतिहासिक घटनाओं का महत्वपूर्ण प्रमाण माने जाते हैं।

6. मिज़ो लोकगीतों का महत्व : मिज़ो लोकगीतों का महत्व : मिज़ो लोकगीत मिज़ो समुदाय के सांस्कृतिक जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ये गीत लोगों के इतिहास, भावनाओं, मूल्यों और पहचान की सुरक्षित रखते हैं। इनके महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं में समझा जा सकता हैं –

1. **सांस्कृतिक पहचान :** मिज़ो लोकगीत मिज़ो लोगों की जीवन शैली, विश्वास, रीति-रिवास और सांस्कृतिक व्यक्तित्व को दर्शाते हैं। इन गीतों के माध्यम से समुदाय की विशिष्ट पहचान स्पष्ट होती है।
2. **ऐतिहासिक अभिलेख** : लिखित साहित्य आने से पहले, लोकगीत ही इतिहास को सुरक्षित करने का मुख्य साधन थे। वीर योद्धाओं की बहदुरी, प्रवासन की कहानियाँ, कबीलाई इतिहास और सामाजिक घटनाएँ इनहि गीतों में सुरक्षित हैं।
3. **मौखिक परंपरा और ज्ञान** – संक्रामण : ये गीत पीढ़ी – दर – पीढ़ी मौखिक रूप से आगे बढ़ते रहे। बच्चे और युवा अपने पूर्वजों, उनके मूल्यों और परम्पराओं के बारे में इनहि गीतों के माध्यम से सीखते थे।
4. **साहित्यक सौन्दर्य :** मीलोकगीतों में सरल किन्तु सुंदर छंद, लय और चितरतमकता मिलती है। ये मिज़ो साहित्यत्मिक परंपरा की नींव माने जाते हैं।

संदर्भ सूची :

1. Dr Laltluangliana Khiangte : History of Mizo Literature(Bu thar)
2. Prof. Darchhawna : Rangkachak Meichher Golden jubilee 2025 Special Edition.
3. Mizo Saga : John Chhana
4. B. Lalthangliana : Mizo Folklore:Folktales, Legends and Songs .Aizawl : Mizo Academy of Letters, 2000.
5. Dr. Laltluangliana Khiangte : Thuhlaril, College Text Book (Mizo) Editorial Board, 2018.
6. Dr. Louis Hauhnar. मिज़ो और ब्रज की लोक कथाओं में अभिप्रायों का तुलनात्मक आध्यान.

•